International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बंजारा लोकगीतों में भक्ति

डॉ. पोरिका नागमणी

सहायक अद्यापिका (हिन्दी विभाग), शास्क्रीया स्नातक महाविध्यालय मुलुगु, मुलुगु जिला

जब से मनुष्य ने बोलना सिखा तब उन्हें मनोरंजन, उपदेश, भक्ति, प्रेम, सौन्दर्य, दुःख, वेदना, पीड़ा, वीरता, उत्साह, को अभिव्यक्त करने के लिए कथा, लोककथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोक नृत्य, लोक गाथा आदि का जन्म हुआ | यह सबको विदित हैं कि लोक साहित्य किसी एक का नहीं होता वह तो परम्परागत रूप से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में मनोरंजन, उपदेश,भक्ति,संकृति, संस्कार आदि के रूप में आगे बढ़ता रहता हैं | और साथ में पीढ़ी दर पीढ़ी उसमें कुछ न कुछ जुड़ते, छटते, परिमार्जित होते जाता हैं | लोकसाहित्य का माध्यम मौखिक होने के कारण आज वह अल्प रूप में लिखित हैं | समय के साथ जागरूक लोकसाहित्य प्रेमी उसे मुद्रित कर हमारे सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हैं | आज सभा-सम्मेलन, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के माध्यम से लुप्त हो रहे लोक साहित्य को संजीवनी प्रदान की जा रही हैं | विश्व के प्रत्येक समूह, जाति, समाज, राष्ट्र का लोक साहित्य हैं | क्योंकि वर्तमान आधुनिक साहित्य लोकसाहित्य की ही देन हैं | उसे हम आधुनिक साहित्य की जन्मदात्री भी कह सकते हैं | जिस प्रकार से प्रत्येक आधुनिक साहित्य की विधा की अपनी एक स्वतंत्र संरचना होती हैं, उसी प्रकार लोक साहित्य का गौर से अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि लोकसाहित्य का भी अपना एक स्वतंत्र ढाँचा होता हैं |

बंजारा लोक साहित्य अभी-भी पूरी तरह से लिखित-संकलित रूप में नहीं हैं | लोगों की जागरूकता एवं सभा-सम्मेलन,संगोष्ठियों के माध्यम से वह संकलित एवं लिखित रूप में हमारे सम्मुख आ रहा हैं | आज आवश्यकता हैं, लोक साहित्य को सम्पूर्ण रूप से लिखित – संकलित किये जाने की | और इस पर गहन चर्चा, गोष्ठी आदि का आयोजन हो, समीक्षा हो | क्योंकि लोकसाहित्य हमारा इतिहास हैं | साहित्य का इतिहास है | जो मौखिक रूप में आज भी

जीवित हैं | लोकसाहित्य की उत्पति और विकास लोक में ही होता हैं | लोक में जन्म लेता है और लोक में ही विकसित होता जाता हैं | इसीलिए लोक साहित्य का कोई एक इनसान लेखक नहीं होता | बल्कि उसका लेखक सम्पूर्ण लोक होता हैं | इसीलिए इस साहित्य को लोकसाहित्य कहा जाता हैं | आधुनिक साहित्य की भांति लोकसाहित्य की भी विधायें होती हैं | जिसमें लोककथा-गाथा-गीत-नृत्य-संगीत,नाट्य आदि विधाएं होती हैं | सम्पूर्ण विश्व में बंजारा जनजाति २० करोड़ से भी अधिक हैं | बंजारा लोक साहित्य में लोकगीत शीर्ष पर हैं | सर्वप्रिय हैं | लोकगीत वास्तव में एक जीवन पद्धति, संस्कार,संस्कृति, तत्व ज्ञान हैं | लोकगीतों में जहाँ तीज-त्यौहार-पर्व, जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीत, ख़ुशी के गीत-दुःख के गीत, परिश्रम-प्रकृति आदि से सम्बन्धित गीत दिखाई देते हैं; वहीं भक्ति से सम्बन्धित गीत-भजन-कीर्तन भी अपना एक अलग स्थान रखते हैं | उन्हीं भक्ति गीतों का समीक्षात्मक अध्ययन यहाँ प्रस्तुत हैं |

१.ईश्वर का स्वरूप एवं भक्ति पद्धति

२.नामस्मरण

३.विश्वकल्याण की भावना

४.मानवतावाद

५.एकता,बंधुता,समता

६.प्रकृति चित्रण

७.भक्ति गीतों में संगीतात्मकता

१.ईश्वर का स्वरूप एवं भक्ति पद्धति :-

भक्ति के क्षेत्र में भक्त और ईश्वर का होना अनिवार्य होता हैं | बिना ईश्वर एवं बिना भक्त के भक्ति संभव नहीं होती | भक्त का ईश्वर तक पहुँचने का साधन भक्ति होती हैं | प्रत्येक भक्त का अपना एक अराध्य होता हैं, जिसके सम्मुख वह अपनी भक्ति प्रकट करता हैं | बंजारा लोकसाहित्य-लोकगीतों का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि बंजारा जनजाति किसे

अपना ईश्वर या अराध्य मानती हैं | और उसकी भक्ति पद्धति क्या हैं | बंजारा जनजाति यह प्रकृति पूजक हैं | वह सबसे पहले प्रकृति को अपना ईश्वर मानती हैं | वह चन्द्र-सूर्य,तारे,गाय-बैल, पेड़-पौधे, खेत-खलियान, पहाड़-नदी-अनाज आदि के प्रति समर्पित दिखाई देती हैं | वह अपने लोकगीतों एवं अरदास में प्रकृति की प्रशंसा करते हुए कहता हैं,

पहाड़ेम पहाड़ कुणसो पहाड़ पड़ोरकोळे तारण, पहाड़ेम पहाड़ हिमालय पहाड़ पड़ोरकोळे तारण कोळतारेणपोहोबांधेनदेसा तेरी आरतीरहै..हैं, कोहोबधादू जग मोतीयरकोळे तारण .....

प्रकृति के बाद वह देवी की अराधना करती हैं | बंजारा लोकगीतों एवं भक्ति गीतों में स्त्री को प्रथम स्थान दिया गया हैं | यही कारण हैं कि बंजारा जनजाति यह देवी के विभिन्न रूपों की अराधना करता हैं |

''जय तळजा भवानी, अम्बा, जगदम्बा, मरयामा, कंकाळी
हिगळा, दुर्गा, आदिमाया शक्ति जगत जननी, याड़ीसाहेबणीसेनसाईंवेस|''

संत सेवालाल जी को बंजारा जनजाति भगवान मानती हैं | क्योंकि उनके क्रांति कारी कार्य द्वारा ही बंजारा जनजाति संगठित हुई थी | एवं उन्हें देवी प्रसन्न होने के कारण वे पूजनी बन गये | उन्हें ईश्वर का अवतार माना जाता हैं |

''सेवा भाया बेटोयेसोनेरीपालकीमा, तीज बोईयोओरीदेवळेमा
डंडी याड़ीबेटियेसोनेरीपालकीमा, डाकळोमाडियोंओरीदेवळेमा
सेवा भाया बेटोयेधोळेघोड़लेपर, भोग लागियोओरीदेवळेमा
डंडी याड़ीबेटियेसोनेरीपालकीमा|

बंजारा देवी की भक्ति तांडो में अपने घर के सम्मुख या मंदिर तथा खेतों में करते हैं | इस सन्दर्भ में डॉ.वी.रामकोटी जी कहते हैं,'' बंजारा मुख्य रूप से देवी के उपासक हैं | विभिन्न

प्रान्तों में बसे हुए बंजारे मेरामायाड़ी[देवी] की पूजा करते हैं | कुछ देवियाँ टांडे में पूजी जाती हैं और कुछ देवियाँ जंगलों में या खेत-खलियानों में पूजी जाते हैं | देवी [माउली] को व्यक्तिगत रूप से भी पूजते है और सार्वजनिक रूप से भी यह देवियों का प्रथम प्रार्थना गीत हैं –

२.नामस्मरण :-

भारतीय भक्ति साहित्य एवं लोकभक्ति साहित्य में नामस्मरण की महिमा को विशेष रूप में देखा जा सकता हैं | हिंदी, मराठी, तमिल, गुजराती आदि में लिखित एवं परम्परा से चली आरहीमौखिक लोक साहित्य में अपने अराध्य, इश की वंदना के साथ नामस्मरण की महिमा का बखान हुआ हैं | मनुष्य को दुःख, निराशा, पीड़ा, क्रोध, इर्षा, द्वेष, ग्लानी, आधी-व्याधि आदि का सामना करना पड़ता हैं | मनुष्य का जीवन अनमोल एवं नश्वर होने के कारण अराध्य संत, ईश्वर आदि के नामस्मरण से भव को पार किया जा सकता हैं |बंजारा लोकगीतों में भजन-कीर्तन आदि में नामस्मरण की महिमा गयी जाती हैं | बंजारा प्रकृति, देवी एवं संतों को भगवान मानता हैं | यही कारण हैं कि वह बंजारा गुरु-संत सेवालाल जी का नामस्मरण करता हैं | यदि क्रोध, काल आदि को पराजित करना हैं, तो तुम्हेसेवालाल जी का नामस्मरण करना होगा | लोकगीतों में अभिव्यक्त लोकभक्त कवि कहता हैं,

''उठो उठोरगोरो, भजन हरिरोकरोर| सरे परिया काल भमरों, क्रोध घालरोफेरोर|
सेवालाल रो नाम भजो, संसारे रो करज सरोर| सत धर्मेतीकरोर कमाई, नेकिती पेट भरोर|''

बंजारा भक्त गुरु-संत सेवालाल जी को ईश्वर मानता हैं | कबीर ने जहाँ गुरु को ईश्वर से श्रेष्ठ बताया-

३.विश्वकल्याण की भावना :-

वैदिक साहित्य भी एक लोक साहित्य ही है | जो एक से दूसरे के पास मौखिक रूप में आगे बढ़ा और लिखा गया | वैदिक लोकसाहित्य में विश्व के मंगल की कामना की गई हैं |

सर्वेभवन्तुसखिन: सर्वेसन्तुनिरामया: | सर्वेभद्राणिपश्यन्तुमाकश्चिददुःखभागभवेत||

बंजारा लोकगीतों में अभिव्यक्त भक्ति साहित्य लोकमंगल एवं विश्व मंगल की कामना करता हैं | प्रत्येक बंजारा भक्त प्रकृति, देवी, संत सेवालाल जी के प्रति अपने आपको समर्पित करता हुआ | जिव-जन्तु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, गाय-बैल, खेत-खलियान, छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष आदि सम्पूर्ण मनुष्य जाति के '' सेनसाईंवेस'' विश्व मंगल की कामना करता हैं |

४.मानवतावाद :

विश्व के प्रत्येक लोक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि किसी ने भी मनुष्य-मनुष्य में भदे-भाव करना नहीं सिखाया | जितने भी महापुरुषों ने जन्म लिया | उन्होंने भी मानवता को सबसे उपर रखा | मानवतावाद मनुष्य को मनुष्य की नजर से देखना, समझना सिखाता हैं | आपस में मिल जुल कर रहना सिखाता हैं | भाई चारा बंधुत्व की भावना सिखाता है | लोकसाहित्य के लोकगीत [भक्ति] इस विधा में भी मानवता वाद का संदेश हमें देखने को मिलता हैं | बंजारा भक्ति गीत कबीर, तुलसी की भाँती समता, बन्धुता, एकता का संदेश देता हैं | कबीर ने ईश्वर भक्ति में जाति, धर्म से श्रेष्ठ मनुष्य को माना था |

जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान | मोल करों तलवार की पड़ा रहने दो म्यान ||
जाति-पति पूछेन कोई, हरि को भजी सो हरि का होई|''

बंजारा लोकगीतों में जाति-धर्म, सम्प्रदाय से उपर मानव को श्रेष्ठ माना हैं | वर्णित संत सेवालाल जी ने भी मानवता वाद का ही संदेश देते हुए कहा

'' कोर गोरेनसाईवेस, बाळ-गोपाळेनसाईवेस|''

बंजारा ईतिहास लेखक तथा प्रथम घुमंतू विमर्श का पुरस्कार प्राप्त करनेवाले प्रा. मोतिराजराठोड जी मानवतावाद के संदर्भ में विस्तार से लिखा हैं | जिसमें से कुछ अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा हैं-

५.एकता, बंधुता,समता :

बंजारा भक्ति गीतों में लोकभक्त कवि भाईचारे से रहने की बात करता हैं | वह अपने गीतों के माध्यम से एकता,बंधुता,समता की स्थापना करता हैं |

''बंधु भावेरोनातोजुडाओ, भारतेरी शान बढ़ाओ |
आपसे रो वैर मिटाओ | ज्योतिती ज्योत लगाड़ोर
खरी खोटी छोड़न, तेरी एकीकरनमळजाओ|| ''

जब प्रत्येक मनुष्य ने बंधु भाव का नाता जोड़गा तब ही हमारे भारत की शान बढ़ेगी | लोकभक्त कवि एक ओर देवी की भक्ति करता हैं तो दूसरी ओर उनकी देश भक्ति को भी देखा जा सकता हैं | उक्त गीत इनके प्रमाण हैं | आपसी बैर मिटा कर ज्ञान रूपी ज्योत से ज्योत जालाओ| झूठ बैमानी को छोड़ कर सब एक हो जाओ | हमारी एकता ही हमारी और देश की शान हैं |

६.प्रकृति चित्रण:

मनुष्य का जन्म प्रकृति की गोद में हुआ | जब उसने पहली बार आँखें खोली तो उसने अपने आस-पास का परिसर देखा | प्रकृति का सौदंर्य देखा | और उससे अभिभूत हो गया | वह प्रकृति में जिया,पला-बढ़ा | प्रकृति ने उसे जल-अन्न और रहने के लिए असरा दिया | वह इसे

कैसे भूल सकता था | यही कारण था कि उसने प्रकृति को ईश्वर माना | बंजारा जनजाति ने भी प्रकृति को ईश्वर माना | वे प्रकृति पूजक कहलाये | हजारो सालो से लेकर आजतक बंजारा जनजाति के लोकगीतों में प्रकृति का चित्रण हमे देखने को मिलता हैं | उनका प्रत्येक गीत मानो प्रकृति से जुड़े हुए हैं | या यूँ कहे कि प्रकृति के बिना अधूरा हैं | भक्ति गीतों में दीवाली, होली, तीज, दशहरा, भोग आदि तीज-त्योहारों के अवसर पर गायेजाने वाले भक्ति गीत अरदास में प्रकृति का चित्रण हमें समर्पित रूप में दिखाई देता है | दीवाली में गोधन तथा विभिन्न पुष्पों की पूजा-अर्चा की जाती हैं | तो तीज के समय गेहूं आदि की पूजा की जाती है | बंजारा प्रकृति में देवी का रूप एवं देवी में प्रकृति का रूप देखता है | बंजारा के प्रत्येक तीज-त्यौहार प्रकृति से जुड़ा हुआ हैं | दशहरे के समय गाये जाने वाले इस भक्ति गीत में लोक कवि प्रकृति के प्रति अपने आपको समर्पित करते हुए प्रकृति की ह्रदय से प्रशंसा करता हैं-

पहाड़ेम पहाड़ कुणसो पहाड़ पड़ोरकोळे तारण, पहाड़ेम पहाड़ हिमालय पहाड़ पड़ोरकोळे तारण कोळतारेणपोहोबांधेनदेसा तेरी आरतीरहै..हैं, कोहोबधादू जग मोतीयरकोळे तारण .....

अधिकतर प्रकृति का चित्रण तुलनात्मक एवं आलम्बन रूप में देखा जा सकता हैं | तीज उत्सव बंजारा कुंवारी लडकियों का त्यौहार हैं | जो दस दिन मनाया जाता हैं | बाँस की टोकरी में काली मिट्टी डालकर गेहूं बोआ जाता हैं |और दस दिनों तक कुँवारीलडकियाँ उसे पुरे भक्ति भाव से पानी से सींचती हैं | वास्तव में यह पूजा गन-गौर की पूजा होती हैं | जिसकी जितनी समृद्ध गेहूँ होगी | मानो प्रकृति ने उसे इच्छा पूर्ति का वरदान दिया हैं | तीज को जल अर्पित करते समय गाये जाने वाले भक्ति गीतों में लाम्डी[इक प्रकार का घास] हरियाली आदि का वर्णन तुलनात्मक एवं आलम्बन रूप में देखा जा सकता हैं-

लांबी-लांबी ये लांबडीवेगेरिया, लांबी-लांबी ये लांबडीवेगेरिया
फांका फोड़ीयेलांबडीवेगेरिया, गंटा मारिये लांबडीवेगेरिया

दळरियेलांबडीवेगेरिया, लांबी-लांबी ये लांबडीवेगेरिया

लेरालेरियेलांबडीवेगेरिया, लांबी-लांबी ये लांबडीवेगेरिया

७.भक्ति गीतों में.संगीतात्मकता:-

प्रत्येक लोकगीत की अपनी एक शैली होती हैं | उसका अपना एक संगीत होता हैं | लय-ताल सबकुछ निराला होता हैं | वह लोकगीत चलते ही व्यक्ति-समाज के हृदय में एक अलग सी हलचल पैदा करता हैं | क्योकि लोकगीत हृदय से निकलता और हृदय में बसता हैं | लोकगीत शास्त्रीय संगीत की भांति ही आनंद देती हैं | वह सहज रूप से उत्पन्न होता हैं | बंजारा भक्ति गीत भी सहज रूप से उत्पन्न हैं | जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आ रहा हैं | जब लोककवि भक्ति गीत गाता हैं, तो एक अलग समा बनजाता हैं | जो ईश्वरीय आनंद प्रदान करता हैं |

अन्नेमा अन्न कुनसो अन्न पड़ोरकोळे तारण, अन्नेम अन्न कोतू अन्न पड़ोरकोळे तारण

कोळतारेणपोहोबांधेनदेसा तेरी आरतीरहै..हैं, कोहोबधादू जग मोतीयरकोळे तारण